शोध पत्रिकाएं क्या कंपनियों के विज्ञापन हैं?

चिकित्सा शोध पत्रिकाओं में दवा कंपनियों के विज्ञापन छपते हैं, यह तो कोई नई बात नहीं है। दवा कंपनियां अपनी दवाइयों की बिक्री बढ़ाने के लिए तमाम किस्म के हथकंडे अपनाती हैं, यह भी कोई हैरत की बात नहीं लगती। यह बात भी काफी समय से पता है कि कुछ शोध पत्रों के लेखकों में प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों या डॉक्टरों के नाम होते हैं मगर वास्तविक लेखक दवा कंपनियों के कर्मचारी होते हैं। मगर अब एक सर्वथा नया तरीका उजागर हुआ जिसे देखकर दवा कंपनियों के प्रबल समर्थक भी हक्का बक्का हैं।

मामला विशाल दवा कंपनी मर्क से सम्बंधित है। ऑस्ट्रेलिया में मर्क की सहायक कंपनी ने एक्सपर्टा मेडिका के एक विभाग एल्सेवियर के साथ एक समझौता किया। समझौता यह था कि एल्सेवियर एक ऐसी पत्रिका प्रकाशित करेगी जो किसी शोध पत्रिका जैसी नज़र आए। इसका कलेवर ऐसा होगा जैसे कि इसमें प्रकाशित लेख निष्पक्ष रेफरियों द्वारा मूल्यांकन के बाद स्वीकार किए जाते हैं। मगर वास्तव में इस पत्रिका में मात्र ऐसे लेखों को पुनः मुद्रित किया जाता था जो मर्क के अनुकूल होते थे।

इस पत्रिका का नाम *ऑस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ बोन एण्ड जॉइन्ट मेडिसिन* था और यह दुनिया भर के 20,000 डॉक्टरों को भेजी जाती थी। सबसे रोचक बात थी कि इस पत्रिका में आप प्रकाशन हेतु आलेख प्रस्तुत नहीं कर सकते थे। इस बात का भी कहीं खुलासा नहीं किया गया था कि यह पत्रिका मर्क द्वारा स्थापित व संचालित है। कई संपादक बताते हैं कि बहुत पैनी निगाह ही यह देख सकती थी कि यह पत्रिका मार्केटिंग का एक औज़ार थी। हो सकता है कि यह पत्रिका एक इन्तहा हो गई थी मगर इस तरह की चीज़ें काफी समय से चलती रही हैं। जैसे कई शोध पत्रिकाओं के विशेष सप्लीमेंट्स दवा कंपनियों द्वारा प्रायोजित होते हैं। दवा कंपनियां न सिर्फ इन्हें प्रायोजित करती हैं बल्कि इन्हें तैयार करने में 'मदद' भी करती हैं।

कई वैज्ञानिकों ने मांग की है कि इस प्रक्रिया पर रोक लगनी चाहिए और पत्रिकाओं में शोध के परिणामों और विज्ञापनों के बीच स्पष्ट भेद नज़र आना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***